समयसार का शिखर पुरुष

(राष्ट्रसंत सिद्धान्तचक्रवर्ती आचार्य श्री विद्यानन्दजी मुनिराज ने प्रख्यात दार्शनिक विद्वान तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर को पत्र द्वारा अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया है। हम यहाँ उनके पत्र को अविकलरूप से प्रकाशित कर रहे हैं। ह्न प्रबन्ध सम्पादक)

प्रकृष्टेन तीर्थंकरेण आभृतं प्रस्थापितम् इति प्राभृतं प्रकृष्टैराचार्यै र्विद्यावित्तवद्भिराभृतं धारितं व्याख्यातमानीतमिति वा प्राभृतम्।

ह्न जयधवला, पुस्तक १, पृष्ठ १२१

अर्थ ह्न *जो प्रकृष्ट तीर्थंकरों द्वारा स्थापित है अथवा विद्याधन से संपन्न प्रकृष्ट आचार्यों द्वारा धारित, व्याख्यात और आनीत है, उसे प्राभृत कहते हैं।*

धर्मानुरागी विद्वद्वर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल !

समयसार वाचना में आपके समयसार व्याख्यान सुनकर हृदय बहुत ही गद्गद् हो गया और उससे बहुत धर्मलाभ भी प्राप्त हुआ। मुझे तो ऐसा लगता है कि जैनदर्शन का मर्म 'समयसार' में भरा है और 'समयसार' का व्याख्याता आज आपसे बढ़कर दूसरा नहीं है। आपको इसका बहुत गूढ़-गम्भीर ज्ञान भी है और उसके प्रतिपादन की सुन्दर शैली भी आपके पास है।

यदि आपको ***'समयसार का शिखर-पुरुष'*** भी आज की तिथि में घोषित किया जाये तो कोई अतिशयोक्ति नहीं है। आपने आज के समय में जब एक-दो बच्चों को भी पालना (संस्कारित करना) बहुत कठिन है, सैकड़ों बालकों को जैनदर्शन का विद्वान बनाकर भी समाज की महती सेवा की है, जो **इतिहास में सदैव स्वर्णाक्षरों** में लिखी जाती रहेगी।

आप चिरायु हों, स्वस्थ रहें और जैनधर्म की महान प्रभावना करते रहें तथा सम्पूर्ण समाज भी एकजुट होकर आपके प्रवचनों को बड़ी सद्भावना से सुनकर लाभान्वित होती रहे ह्न यही मेरी हार्दिक अभिलाषा है।

आशीर्वाद

(ह्न आचार्य विद्यान्द मुनि)

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 27 303 अंक : 3

कर कर आतमहित रे प्रानी...

कर कर आतमहित रे प्रानी ।। टेक।।

जिन परिणामनि बन्ध होत है, सो परणति तज दुखदानी।।
कर कर आतमहित रे प्रानी।।1।।

कौन पुरुष तुम कहाँ रहत हो, किहि की संगति रति मानी।
जे परजाय प्रगट पुद्गलमय, ते तैं क्यों अपनी जानी।।
कर कर आतमहित रे प्रानी ।।2।।

चेतन जोति झलक तुझ मांही, अनुपम सो तैं विसरानी।
जाकी पटतर लगत आन नहिं, दीप रतन शशि सूरानी।।
कर कर आतमहित रे प्रानी।।3।।

आप में आप लखो अपनो पद, 'द्यानत' करि तन मन वानी।
परमेश्वर पद आप पाइये, यौं भाषे केवलज्ञानी।।
कर कर आतमहित रे प्रानी।।4।।

ह्न कविवर पण्डित द्यानतरायजी

परमाणु का विशेष स्वरूप

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार की 28 वीं गाथा के बाद समागत 42 वें कलश पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। कलश मूलत: इसप्रकार है ह्न

(मालिनी)

परपरिणतिदूरे शुद्धपर्यायरूपे
सति न च परमाणो: स्कन्धपर्याय शब्द:।
भगवति जिननाथे पंचबाणस्य वार्ता
न च भवति यथेयं सोपि नित्यं तथैव॥४२॥

पर परिणति से दूर शुद्धपर्यायरूप होने से परमाणु को स्कन्धपर्यायरूप शब्द नहीं होता। जिसप्रकार भगवान जिननाथ में कामदेव की वार्ता नहीं होती, उसीप्रकार परमाणु भी सदा अशब्द ही होता है।

(गतांक से आगे...)

अहा....! एक पृथक् रजकण में जो पर्याय होती है, वह परपरिणति से दूर है अर्थात् वह परपरिणति के संबंध से रहित है और इसी कारण वह पर्याय शुद्ध कहलाती है।

परमाणु में स्कन्धपर्यायरूप शब्द नहीं होता। तात्पर्य यह है कि बहुत परमाणुओं के इकट्ठे होने पर वाणी निकलती है; परन्तु एक परमाणु में शब्द नहीं होता।

यहाँ दृष्टान्त दिया है कि वीतराग परमात्मा को पाँच इंद्रियों के विषय भोगनेरूप काम की वासना नहीं होती। अहा..! जो परम वीतराग, पूर्ण आनन्दस्वरूप हुये हैं, उन जिननाथ भगवान को जिसप्रकार कामदेव की वार्ता नहीं होती; उसीप्रकार परमाणु में भी शब्दशक्ति नहीं होती। वह सदा अशब्द ही रहता है। अकेला परमाणु अशब्द है।

अब आगामी गाथा में निश्चय-व्यवहार से पुद्गल द्रव्य का स्वरूप कहते हैं।

गाथा मूलत: इसप्रकार है ह्न

पोग्गलदव्वं उच्चइ परमाणू णिच्छयेण इदरेण।
पोग्गलदव्वो त्ति पुणो ववदेसो होदि खंधस्स ।।29।।

अर्थ – निश्चय से परमाणु को पुद्गलद्रव्य कहा जाता है और व्यवहार से स्कन्ध को पुद्गलद्रव्य कहा जाता है।

शुद्ध निश्चयनय से स्वभावशुद्धपर्यायात्मक परमाणु को ही पुद्गलद्रव्य कहा जाता है। व्यवहार से अन्य विभावपर्यायात्मक स्कन्ध पुद्गलों को पुद्गलपना उपचार द्वारा सिद्ध होता है।

देखो ! क्या कहते हैं... कि शुद्धनिश्चयनय से स्वभाव शुद्धपर्यायस्वरूप परमाणु को ही अर्थात् जो पर से भिन्न है ह्न ऐसे निर्मल पर्यायवाले परमाणु को ही पुद्गलद्रव्य कहा गया है। भाई ! स्कन्ध को पुद्गलद्रव्य कहना तो उपचार है; क्योंकि वे सब स्कन्ध तो इकट्ठे हुये जड़ (परमाणुओं) का जत्था है, वह कोई एक वस्तु नहीं है; इसलिये जो अकेला परमाणु है, जिसको स्वभाव शुद्धपर्याय है, उसको ही ह्न वास्तव में पुद्गलद्रव्य कहा है। इसीतरह आत्मा में राग और पुण्य-पाप रहित अर्थात् निर्मलपर्याय से सहित आत्मा को ही आत्मा कहा जाता है।

अहा..! जिसप्रकार शुद्धनिश्चय से स्वभावशुद्धपर्यायस्वरूप होने से परमाणु को पुद्गलद्रव्य कहते हैं, उसीप्रकार भगवान आत्मा को आत्मा किसप्रकार कहना ?

राग और पुण्य-पाप रहित जो त्रिकालशुद्धस्वभाव है, उसका जिसको अंतरंग में भान हुआ है अर्थात् वैसी शुद्धपर्याय सहित जो आत्मा है, उसको ही आत्मा कहा जाता है। दया, दान, भक्ति इत्यादि का विकल्प आत्मा है ही नहीं; वह तो अनात्मा है।

अहा...! अज्ञानी प्रतिदिन के चौबीस घंटों में से तेवीस घंटे तो पाप ही करता है और एक घंटा मंदिर में रहता है, उसमें वह थोड़ा वाचन करता है, भक्ति करता है और मानता है कि इससे कल्याण हो जायेगा। अरे रे...! इसने ऐसे ही अवतार

(शेष पृष्ठ 32 पर ...)

छहढाला प्रवचन

प्रयोजनभूत तत्त्वों के श्रद्धान में भूल

जीवादि प्रयोजनभूत तत्त्व, सरधैं तिनमांहि विपर्ययत्व।
चेतन को है उपयोगरूप, विनमूरति चिन्मूरति अनूप।।२।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

मैं कौन हूँ और मेरा सच्चा स्वरूप क्या है? इसकी सच्ची पहचान जीव ने कभी नहीं की। अनादि से अपने सच्चे स्वरूप को भूलकर जीव ने अपने को पुण्य-पापरूप और शरीररूप ही मान रखा है ह्न यह अगृहीत मिथ्यात्व है। अगृहीत अर्थात् किसी के उपदेश से जो नयी ग्रहण नहीं की गई, किन्तु अनादि से चली आई है – ऐसी भूल; उसको नैसर्गिक-मिथ्यादर्शन भी कहते हैं। अपने स्वभाव के बारे में अनादि से ऐसी भूल होने के उपरान्त, कुगुरुओं के उपदेश द्वारा वीतरागदेवादि से विपरीत कुदेवादि की मान्यता को जीव ग्रहण करता है, वह गृहीत मिथ्यात्व है; उसका वर्णन आगे छन्द-९ से करेंगे।

जीव ने गृहीत मिथ्यात्व को तो कई बार छोड़ा है; परन्तु आत्मश्रद्धानपूर्वक अगृहीत मिथ्यात्व कभी नहीं छोड़ा। कभी बाह्य त्यागी हुआ और शुभभाव करके स्वर्ग में गया, तब भी उस शुभराग में धर्म मानकर उस राग के ही अनुभव में रुक गया, राग से भिन्न चेतनरूप आत्मा का अनुभव न किया, जिससे अगृहीत मिथ्यात्व नहीं छूटा। कुदेवादि के सेवनरूप गृहीतमिथ्यात्व को छोड़ा और सच्चे देव गुरु को माना, पंच महाव्रत का पालन भी किया; क्योंकि इसके बिना नवें ग्रैवेयक तक नहीं जा सकता। इसप्रकार जीव ने गृहीतमिथ्यात्व छोड़कर भी उपयोगस्वरूप शुद्धात्मा की श्रद्धारूप सम्यग्दर्शन प्रगट नहीं किया और मिथ्यात्व नहीं छोड़ा, इसकारण संसार-भ्रमण ही बना रहा; इसलिये यहाँ जीवादि का यथार्थ स्वरूप जानकर मिथ्यात्व का सर्वथा नाश करने का उपदेश देते हैं।

आत्मा का स्वरूप कैसा है? सर्वज्ञ भगवान ने आत्मा ज्ञान-आनन्द स्वरूप देखा है; वह देह से भिन्न है ह्न ऐसे आत्मा को जानने से देह के साथ एकत्वबुद्धि छूट जाती

है। आत्मा के स्वभाव में दुःख नहीं है, आत्मा तो ज्ञान-आनन्द व शांति से भरा है; देह मूर्त है, आत्मा अमूर्त है। 'विनमूरति' अर्थात् वर्णादि से रहित और 'चिन्मूरति' अर्थात् चैतन्यस्वरूप ह्न ऐसा आत्मा है।

कर्म और शरीर अजीव है, पुण्य-पाप आस्रव है; उसको ही जीव का स्वरूप समझना सर्वज्ञ भगवान के उपदेश से विपरीत मान्यता है, मिथ्याश्रद्धा है। अनन्त जीव सर्वज्ञ-केवली भगवान हुए, सीमंधरस्वामी आदि तीर्थंकर भगवंत विदेह क्षेत्र में (मनुष्यलोक में ही) सर्वज्ञता सहित वर्तमान में विराज रहे हैं; उन सब भगवंतों ने उपयोगस्वरूप आत्मा देखा है, आत्मा को जड़रूप रागरूप नहीं देखा। उपयोगरूप आत्मा भगवान ने देखा और उपदेश में ऐसा ही दिखाया। ऐसे आत्मा को देह से पृथक् अनुभव में लेकर हे जीव ! मिथ्यात्व को छोड़।

जीव, अजीव, आस्रव, बन्ध, संवर, निर्जरा, मोक्ष ह्न ये सात तत्त्व प्रयोजनभूत हैं अर्थात् उनका ज्ञान करना प्रयोजनभूत है। अजीव या आस्रव-बन्ध ह्न ये मोक्ष के लिये प्रयोजनभूत नहीं हैं; परन्तु उनको छोड़ने के लिये उनकी पहचान करना प्रयोजनभूत है। पहचान के बिना उनको छोड़ेगा कैसे? घर में कोई दुश्मन घुस गया हो, उसको पहचाने नहीं और मित्र मान ले तो उसको घर से निकालेगा कैसे? वैसे ही रागादि आस्रव शत्रु जैसा है, यदि उसको मित्र मान ले अर्थात् उसको धर्म का साधन मान ले तो छोड़ेगा कैसे? सभी तत्त्वों का स्वरूप जैसा है; वैसा (अन्यूनं अनतिरिक्तं) जानकर सच्ची श्रद्धा करने से भूल मिटती है; और भूल मिटने पर दुःख मिटता है। अतः जिसको दुःख से छूटकर सुखी होना हो उसको जीवादि सात तत्त्वों का एवं सच्चे देव-गुरु-धर्म का स्वरूप पहचानना चाहिए। शुद्धदृष्टि से देखने पर सभी तत्त्वों में शुद्ध जीव ही उपादेय है। अजीव तो भिन्न है, आस्रव-बन्ध दुःख के कारण हैं; संवर-निर्जरा सुख के कारण हैं; और मोक्ष पूर्ण सुखरूप है।

जीव चेतन है, उसका निजरूप तो उपयोग है, वह सुख से भरा है; अजीव में ज्ञान या सुख-दुःख नहीं हैं। जीव ही ज्ञान से स्वपर को जानता है और अपने सुख का वेदन करता है। जगत् में अन्य किसी की उपमा जिसको लागू नहीं होती ह्न ऐसा अनुपम जीवतत्त्व उपयोगरूप है। ऐसे निजतत्त्व की पहचान के बिना जीव अनादि से दुःखी ही रहा। जब अपनी पहिचान करे तब मिथ्यात्व मिटे और दुःख छूटे। 'मैं उपयोगस्वरूप

जीव हूँ' ह्न ऐसे अनुभव के बिना देहबुद्धि नहीं मिटती और सुख भी प्रगट नहीं होता।

पहली ढाल के १४ वें छन्द में कहा था कि 'कैसे रूप लखै आपनो' - विषयों में मग्न जीव अपना रूप अर्थात् आत्मा का स्वरूप कैसे पहचान सकता है?

आत्मा का निजरूप क्या है, सो यहाँ कहा कि -

- **चेतन को है उपयोगरूप, विनमूरति चिन्मूरति अनूप।**

श्री कुन्दकुन्द स्वामी ने समयसार में भी यही कहा है -

- **अहमिक्को खलु सुद्धो दंसणणाणमइओ सदा अरूवी ।**

मैं एक, शुद्ध, ज्ञानदर्शनमय, सदा अरूपी हूँ।

- **सव्वण्हुणाणदिट्ठो जीवो उवओग लक्खणो णिच्चं ।**

सर्वज्ञ के ज्ञान से देखा गया जीव नित्य उपयोग लक्षण रूप है।

- नाटक-समयसार में पं. बनारसीदासजी भी कहते हैं कि -

चेतनरूप अनूप अमूरत सिद्धसमान सदा पद मेरो ।

- श्रीमद् राजचंद्रजी आत्मसिद्धि काव्य में कहते हैं कि ह्न

शुद्ध बुद्ध चैतन्यघन स्वयंज्योति सुखधाम।

जिसप्रकार सर्वज्ञ भगवान का देखा हुआ जीव का यथार्थ स्वरूप ज्ञानीजनों ने स्वयं अनुभव में लेकर शास्त्र में दिखाया है; उसीप्रकार अच्छी तरह पहचानना चाहिए।

- नवतत्त्वों में जीव चेतनरूप है।
- चेतनारहित पुद्गलादि पाँच द्रव्य अजीव हैं।
- मिथ्यात्व और रागद्वेषादि भाव, जिनसे कर्म आते हैं व बंधते हैं ह्न वह आस्रव तथा बंध है।
- सम्यग्दर्शनपूर्वक शुद्धात्मा का ज्ञान व उसमें लीनता से शुद्धता होने पर नये कर्म का निरोध होना और पुराने कर्मों का झड़ जाना ह्न संवर-निर्जरा है।
- और सम्पूर्ण सुखरूप तथा कर्म के सर्वथा अभावरूप मोक्ष है।

ऐसे तत्त्वों की पहिचान करे तब जीव का मिथ्यात्व मिटे। अतः अपने हित के लिये सात तत्त्वों का ज्ञान उपयोगी है, आवश्यक है। तत्त्व को जाने नहीं और धर्म करना चाहे तो नहीं हो सकता। धर्म करने के लिये अर्थात् सुखी होने के लिये जीवादि तत्त्वों को पहिचानकर उनके सम्बन्ध में विपरीत मान्यता मिटा देना चाहिए। **(क्रमशः)**

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : मैं शुद्ध हूँ ह्न इसका अर्थ क्या है ?

उत्तर : नर-नारकादि जीव के विशेष, अजीव, पुण्य, पाप, आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा, मोक्ष ह्न इन नव तत्त्वों से एक टंकोत्कीर्ण ज्ञायकभाव अत्यंत भिन्न होने से मैं शुद्ध हूँ। साधक-बाधक की पर्याय से आत्मा को अत्यंत भिन्न कहा। वह शरीरादि से तो अत्यंत भिन्न है ही, पुण्य-पापादि से भी अत्यंत जुदा है; इसके अतिरिक्त संवर, निर्जरा और मोक्ष की शुद्ध निर्मल पर्याय के व्यवहारिक भावों से भी आत्मा को अत्यंत भिन्न कहकर दिगम्बर संतों ने अन्दर के रहस्य को व्यक्त कर दिया है। ऐसी बात अन्यत्र है ही नहीं।

प्रश्न : भगवान आत्मा आनन्दस्वरूप है ह्न इसप्रकार आप आत्मा के गुणों का विशद व्याख्यान करते हो; परन्तु वह भगवान चला कहाँ गया ? यह तो बताइये।

उत्तर : भगवान तो जहाँ है, वहीं है; परन्तु इस भगवान का इस जीव को भान नहीं है, इसलिये दृष्टि में नहीं आता। स्वयं भगवान स्वरूप कारण परमात्मा है ह्न ऐसा जिसको हृदय में जमता है, उसी को कारण परमात्मा है; परन्तु जिसको ऐसा जमता ही नहीं कि मैं परमात्मस्वरूप हूँ, उसके लिये कारण परमात्मा कहाँ है ? उसको तो राग और अल्पज्ञता ही है। जिसको कारण परमात्मा का विश्वास जमता है, उसी को कार्यरूप में सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र प्रगट होता है।

प्रश्न : तो अज्ञानी को क्या करना ?

उत्तर : अज्ञानी को प्रथम वस्तुस्वरूप का सच्चा ज्ञान करके आत्मा का भान करना चाहिये। यही सम्यग्दर्शन प्राप्त करने का सच्चा उपाय है। शुभराग या क्रियाकाण्ड करना सच्चा उपाय नहीं है।

प्रश्न : लोक छह द्रव्यस्वरूप है, उसमें जीव सप्तम द्रव्य हो जाता है क्या ?

उत्तर : लोक है तो छहद्रव्यस्वरूप ही; किन्तु वह ज्ञेय होने से व्यक्त है और उसको जाननेवाला जीव उससे भिन्न है; अत: इसी अपेक्षा से उसे सप्तम द्रव्य कहा है।

प्रश्न : आत्मद्रव्य की महिमा विशेष है या द्रव्य को लक्ष्य में लेनेवाली पर्याय की ?

उत्तर : आत्मद्रव्य की महिमा विशेष है। पर्याय द्रव्य का लक्ष्य करे, तब मोक्षमार्ग का प्रारम्भ होता है ह्न इसी अपेक्षा से पर्याय की महिमा कही जाती है; किन्तु पर्याय तो एक समय की है, जबकि द्रव्य पर्याय से अनन्त-अनन्त गुणी सामर्थ्यवाला है ह्न त्रिकाली महाप्रभु है, इसलिये द्रव्य की महिमा ही विशेष है।

प्रश्न : नियमसार में संवर-निर्जरा-मोक्षतत्त्व को भी साररूप नहीं कहा, इसमें क्या रहस्य है ?

उत्तर : आत्मा ही एक सर्वतत्त्वों में साररूप है। संवर-निर्जरा और मोक्ष उत्पन्न करने की अपेक्षा से तो हितरूप और साररूप कहे जाते हैं, किन्तु नियमसारजी में उन्हें भी साररूप नहीं कहा। इसका कारण यह है कि वे पर्याय हैं, नाशवान हैं, क्षणिक हैं; और आत्मा तो अविनाशी ध्रुव होने से साररूप है। संवरादितत्त्व तो नाशवान भाव हैं, उनसे अविनाशी भगवान आत्मा दूर है। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र-वीर्यादिभाव पर्याय हैं, विनाशीक हैं; अत: साररूप नहीं है। अविनाशी भगवान आत्मा ही एक साररूप होने से नाशवान भावों से दूर है। अहा..हा..। पर्याय के समीप ध्रुव भगवान पड़ा है, वही अकेला साररूप होने से दृष्टि में लेने योग्य है और तो सर्व असार है।

प्रश्न : उपयोग किसका लक्षण है ? उसको किसका अवलम्बन है ह्न किसके अवलम्बन से प्रगट होता है ? उस उपयोग की अस्ति किसके कारण से है और किसके कारण से नहीं है ?

उत्तर : उपयोग आत्मा का लक्षण है, उसको ज्ञेय पदार्थों का अवलम्बन नहीं है। आत्मा के अवलम्बन से उपयोग प्रगट होता है, बाह्य पदार्थों के अवलम्बन से नहीं। आत्मा को तो परपदार्थों का अवलम्बन है ही नहीं। अरे ! उसके उपयोग को भी बाह्य पदार्थों का अवलम्बन नहीं है। उपयोग लक्षण को तो लक्ष्य ऐसे आत्मा का अवलम्बन है।

परपदार्थों के अवलम्बन से अर्थात् देव-गुरु-जिनवाणी के अवलम्बन से आत्मा का उपयोग प्रगट नहीं होता है। उपयोग की अस्ति ज्ञेय पदार्थों के कारण नहीं है, परन्तु वह उपयोग जिसका लक्षण है ह्न ऐसे आत्मा से अस्तिरूप है। उस उपयोग को पर का अवलम्बन कैसे हो ? अधिक वाँचे, अधिक श्रवण करे तो शुद्धि की वृद्धि हो ह्न ऐसा नहीं है। शुद्धि की वृद्धि तो नियम से आत्मा के अवलम्बन से ही होगी।

दशलक्षण महापर्व धूमधाम से मनाया

दिनांक 4 सितम्बर से 14 सितम्बर, 2008 तक दशलक्षण महापर्व देश-विदेश में बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस सन्दर्भ में अनेक स्थानों से समाचार प्राप्त हो रहे हैं, अभी तक उपलब्ध कुछ स्थानों के समाचार यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

❊ मुम्बई : यहाँ भारतीय विद्या भवन में पर्व के अवसर पर श्री सीमन्धर जिनालय के तत्त्वावधान में प्रतिदिन प्रात: ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के समयसार का सार पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। अन्तिम दिन शंका-समाधान का कार्यक्रम रखा गया, जिसमें डॉ.भारिल्ल द्वारा तार्किक शैली में श्रोताओं की जिज्ञासाओं का समाधान किया गया।

आपके प्रवचनों के पूर्व पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री राजकोट के प्रवचन हुये साथ ही रात्रि में सीमंधर जिनालय में भी ज्ञायकजी के प्रवचनों का लाभ मिला।

❊ जयपुर (श्री टोडरमल स्मारक भवन) : यहाँ पर्व के अवसर पर प्रात: पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री के निर्देशन में महाविद्यालय के छात्रों द्वारा दशलक्षण मंडल विधान किया गया। तदुपरान्त गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन एवं ब्र. यशपालजी जैन के बारह भावना के आधार से प्रवचन हुए। दोपहर में ब्र. विमलाबेन द्वारा तत्त्वार्थसूत्र की कक्षा तथा रात्रि में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल एवं पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल के दशधर्मों पर हुए प्रवचनों का लाभ समाज को मिला। प्रवचनोपरान्त श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के छात्रों द्वारा अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किये गये।

❊ जयपुर (तेरापंथियान बडा मंदिर, जौहरी बाजार) : यहाँ समाज के विशेष आग्रह पर सिद्धान्तसूरि पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल पधारे। आपके द्वारा प्रतिदिन प्रात: समयसार के कर्त्ताकर्म अधिकार पर सरल-सरस प्रवचनों से आशातीत लोगों ने लाभ लिया। प्रवचनोपरान्त प्रतिदिन महाविद्यालय के छात्र सर्वज्ञ भारिल्ल एवं आराध्य टडैया ने प्रश्नमंच का संचालन किया।

❊ जयपुर (मुलतान मंदिर, आदर्शनगर) : यहाँ पर्व के अवसर पर प्रात: पूजन-विधान के पश्चात् पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के प्रवचनों का लाभ मिला। सायंकाल पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री के प्रवचन हुये। दोनों समय प्रवचनों से समाज विशेष लाभान्वित हुई। रात्रि में विविध ज्ञानवर्धक कार्यक्रम कराये गये।

❊ रतलाम (म. प्र.) : यहाँ श्री दिग.जैन आदिनाथ जिनालय में समाज के अध्यक्ष श्री राजकुमारजी अजमेरा के विशेष आग्रह पर जयपुर से पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा पधारे।

यहाँ प्रतिदिन प्रात: पूजन-विधान के पश्चात् पण्डितजी के समयसार ग्रन्थाधिराज की 3, 4, 199 व 200 गाथाओं पर प्रवचन हुये। दोपहर में मोक्षमार्गप्रकाशक और नियमसार पर तथा रात्रि में दशलक्षण धर्म, रत्नकरण्ड श्रावकाचार, कार्तिकेयानुप्रेक्षा, पद्मनंदि पंचविंशतिका आदि विषयों पर आपके प्रवचन हुये।

प्रवचनों के अतिरिक्त आपके द्वारा नियमसार ग्रंथ की 47 से 49 एवं 156 गाथाओं के आधार से विशेष कक्षाओं का भी आयोजन किया गया। **ह्न राजकुमार अजमेरा (अध्यक्ष)**

❊ कोलकाता : यहाँ पद्मोपुकुर रोड़ भवानीपुर स्थित श्री दिगम्बर जैन मंदिर में मुमुक्षु मंडल के विशेष आग्रह पर जयपुर से श्री टोडरमल दि. जैन सि. महाविद्यालय के उपप्राचार्य पण्डित शांतिकुमारजी पाटील पधारे।

आपके प्रात: समयसार के कर्त्ताकर्माधिकार पर एवं रात्रि में कार्तिकेयानुप्रेक्षा के आधार से दशधर्मों पर व्याख्यान हुये। इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: कर्मदहन विधान पण्डित कांतिलालजी जैन इन्दौर के निर्देशन में सम्पन्न हुआ। पूज्य गुरुदेवश्री के सी. डी. प्रवचन एवं सांयकाल स्थानीय विद्वान पण्डित प्रकाशभाई शहा के प्रवचनों का भी लाभ मिला। पण्डित अनीश जैन छिन्दवाड़ा ने दोपहर में कक्षा एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये। **ह्न हर्षदभाई शहा**

❊ जयपुर (महावीर नगर) : यहाँ मंदिर के मंत्री श्री पदमचन्दजी पापडीवाल के विशेष आग्रह पर पधारे पण्डित संजीवकुमारजी गोधा के प्रतिदिन सायंकाल सारगर्भित प्रवचनों के माध्यम से विशेष धर्म प्रभावना हुई। प्रतिदिन प्रात: विशेष पूजन-विधान एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम हुये। ज्ञातव्य है कि दसलक्षण से पूर्व भी गोधाजी के सोलहकारण भावनाओं पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। कार्यक्रमों में लगभग 300-350 लोगों ने धर्म लाभ लिया।

❊ कोलारस (म.प्र.) : यहाँ श्री आदिनाथ जिनालय में पर्व के अवसर पर प्रात: पंचपरमेष्ठी विधान एवं दसलक्षण विधान के पश्चात् पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री जयपुर के मोक्षमार्ग प्रकाशक पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। सायंकाल आपके द्वारा धर्म के दशलक्षण पर सारगर्भित प्रवचनों से समाज विशेष लाभान्वित हुई। आपके अतिरिक्त चन्द्रप्रभ जिनालय में पण्डित अनुरागजी शास्त्री भगवाँ द्वारा तीनों समय तत्त्वार्थसूत्र, छहढाला एवं दसलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। ज्ञातव्य है कि पर्व के दौरान एक दिन पण्डित पीयूषजी शास्त्री के **लुकवासा** में भी प्रवचनों का लाभ मिला।

❊ सागर (म.प्र.) : यहाँ प्रतिदिन प्रात: दसलक्षण विधान के पश्चात् पण्डित प्रवीणकुमारजी शास्त्री जयपुर के विधान की जयमाला एवं समयसार पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र का अर्थ एवं तीन लोक पर विशेष कक्षा का आयोजन हुआ। रात्रि में वैराग्य प्रेरक विभिन्न विषयों पर प्रवचन हुये। आपके प्रवचनों के पूर्व बालकक्षा चली।

इस अवसर पर पाठशाला हेतु बाल विकास फण्ड हेतु 35000/-रुपये एकत्रित हुये। युवा फैडरेशन एवं महिला फैडरेशन का पुनर्गठन शपथ ग्रहण समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ।

❊ जयपुर (मंदिर बड़ेदीवानजी) : यहाँ राजस्थान जैन सभा के तत्त्वावधान में दसलक्षण महापर्व के अवसर पर डॉ. दीपकजी जैन द्वारा प्रतिदिन सायंकाल दसलक्षण धर्म पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला।

व्याख्यानमाला सम्पन्न

मुम्बई : यहाँ दिनांक 27 अगस्त से 3 सितम्बर,08 तक जैन अध्यात्म स्टडी सर्किल द्वारा आयोजित 8 दिवसीय व्याख्यानमाला सम्पन्न हुई।

व्याख्यानमाला का आयोजन मुम्बई शहर के भारतीय विद्या भवन-चौपाटी, वालकेश्वर, सी. पी. टैंक, दादर, चिंचबंदर, चिंचपोकली, घाटकोपर, ताड़देव इत्यादि स्थानों पर हुआ।

इसमें ख्याति प्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित ज्ञानचंदजी सोनागिर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, ब्र. हेमचंदजी 'हेम' देवलाली, पण्डित गुलाबचंदजी जैन बीना, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित विरागजी शास्त्री नागपुर, पण्डित फूलचन्दजी शास्त्री उमराला, पण्डित श्रेयांसजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित आदित्यजी शास्त्री खुरई, पण्डित किशोरजी शास्त्री, पण्डित अनुभवजी सोलापुर एवं पण्डित अभिषेकजी छिन्दवाड़ा इत्यादि विद्वानों के विभिन्न विषयों पर व्याख्यानों का लाभ उपस्थित जनसमुदाय को मिला।

१७० तीर्थंकर विधान एवं शिक्षण-शिविर सम्पन्न

रतलाम (म. प्र.) : श्रीमती तेजकुंवरबाई धर्मपत्नी स्व. श्री शांतिलालजी पाटनी की मंगल भावना से प्रेरित होकर पाटनी परिवार द्वारा दिनांक ९ से १३ अगस्त,०८ तक पाँच दिवसीय आध्यात्मिक कार्यक्रम स्थानीय श्री दि. जैन आदिनाथ चैत्यालय में बड़ी धूमधाम से मनाया गया। सभी कार्यक्रम पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा के कुशल निर्देशन में सम्पन्न हुये।

इस अवसर पर १७० तीर्थंकर मण्डल विधान की पूजन विधानाचार्य पण्डित अश्विनजी नानावटी नौगामा तथा पिड़ावा की संगीत मंडली द्वारा संगीत की मधुर स्वरलहरियों के साथ कराई गई। दोपहर में प्रवचनसार की गाथा ६ से १० तक की कक्षा एवं रात्रि में मोक्षशास्त्र के प्रथम अध्याय की कक्षा पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा एवं बालकक्षाऐं पण्डित अश्विनजी ने लीं।

इसके अतिरिक्त दोपहर एवं रात्रि में पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बाँसवाड़ा, पण्डित अनिलकुमारजी पाटोदी बड़नगर, पण्डित कमलकुमारजी बोहरा कोटा तथा स्थानीय विद्वान पण्डित पद्मकुमारजी अजमेरा के प्रवचनों का लाभ भी समाज को मिला।

*** वीतराग-विज्ञान पाठशाला का शुभारंभ ह्न** यहीं रविवार दिनांक २४ अगस्त को माणकचंदजी जैन, अहमदाबाद द्वारा वीतराग-विज्ञान पाठशाला का विधिवत् उद्घाटन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री पद्मकुमारजी अजमेरा ने की।

प्रति शनिवार व रविवार को संचालित होने वाली इस पाठशाला में अध्यापन कार्य हेतु श्री राजकुमारजी शास्त्री ने ध्रुवधाम बाँसवाड़ा से विद्वानों को भेजने हेतु सहर्ष स्वीकृति प्रदान की।

शुभारम्भ के अवसर पर बाँसवाड़ा के छात्रद्वय श्री अमोलजी तथा श्री अमितजी द्वारा बाल एवं प्रौढ़ कक्षायें ली गईं। विद्यार्थियों की आशा से भी अधिक उपस्थिति के कारण मंदिरजी के अतिरिक्त एक कक्षा श्री कांतिलालजी झमकलालजी बड़जात्या के निवास पर भी लगाई गई।

कोटा में आचार्य धरसेन विद्यालय का उद्घाटन

कोटा (राज.) : यहाँ मुमुक्षु आश्रम के प्रांगण में आचार्य धरसेन महाविद्यालय का भव्य उद्घाटन समारोह १५ अगस्त, ०८ को सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम का प्रारम्भ नित्य नियम पूजन से हुआ। झंडारोहण बाबूलाल, मुकेशकुमार, मनोजकुमार, बोरखंडिया परिवार बूंदी ने किया। तत्पश्चात् पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन के प्रवचनोपरान्त ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का मंगलमय प्रवचन हुआ। अपने प्रवचन में डा. भारिल्ल ने उपाध्याय एवं शास्त्री डिग्री की उपयोगिता पर बल देते हुये कहा कि समाज में यही विद्यार्थी विद्वान बनकर मनुष्य जन्म की सार्थकता बतायेंगे एवं नर से नारायण बनाने में कार्यकारी होंगे।

इस अवसर पर आयोजित सभा की अध्यक्षता श्री महीपालजी ज्ञायक बाँसवाड़ा ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री अशोककुमारजी लुहाड़िया मंगलायतन एवं श्री राजकुमारजी शास्त्री बाँसवाड़ा तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में सर्वश्री सत्यनारायणजी दाधीच, ज्ञानचंदजी जैन, कमलजी बोहरा, मदनलालजी वकील बून्दी, वीरेन्द्र हरसोरा एवं बालचंदजी पटवारी आदि विराजमान थे।

मंगलाचरण नृत्य के माध्यम से कु. नृत्या जैन ने किया। स्वागत उद्बोधन संस्थापक ट्रस्टी प्रेमचंदजी बजाज ने किया। विद्यालय के विद्यार्थियों का परिचयपण्डित मनीषकुमारजी शास्त्री ने करवाया ।

इस अवसर पर वरिष्ठ नागरिक श्री मदनलालजी वकील, श्री दि. जैन मुमुक्षु मण्डल के अध्यक्ष श्री ज्ञानचंदजी जैन एवं मुमुक्षु समाज के संरक्षक श्री राजेन्द्रकुमारजी बज ने अपने विचार व्यक्त किये।

इसी मंगल प्रसंग पर कोटा संभागीय अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का गठन किया गया। जिसमें अनेकों राष्ट्रीय व प्रांतीय पदाधिकारियों के साथ शपथ ग्रहण का कार्य डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने कराया। कोटा संभाग संगठन प्रभारी विनोदकुमारजी सेठिया, मंत्री पण्डित जयकुमारजी जैन बाँरा आदि अनेक लोगों ने शपथ ग्रहण की। आचार्य धरसेन दिगम्बर जैन सिद्धांत विद्यालय का उद्घाटन डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, श्री महीपालजी ज्ञायक, पण्डित प्रदीपजी झांझरी आदि ने किया।

अंत में आभार प्रदर्शन श्रीमती सुनीता बजाज, ट्रस्टी मुमुक्षु आश्रम ने किया। सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन पण्डित रतनचन्द चौधरी, निदेशक मुमुक्षु आश्रम ने किया। ●

महाविद्यालय के भूतपूर्व शास्त्री/स्नातक विद्वानों के संगठन ह्न

पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद् का गठन

आपको यह सुखद समाचार देते हुये हमें बहुत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि श्री टोडरमल स्मारक भवन की छत के नीचे चलनेवाले समस्त विद्यालयों के भूतपूर्व शास्त्री/स्नातक विद्वानों का 'पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद' के नाम से एक संगठन का गठन किया गया है।

श्री टोडरमल स्मारक भवन में संचालित महाविद्यालय पूरे देश में विद्वान बनाने के कारखाने के रूप में प्रसिद्ध है। जयपुर में प्राचीन काल से ही पाषाण के भगवान तो बनते ही रहे हैं, किन्तु विगत ३१ वर्षों से इस महाविद्यालय के माध्यम से जीवन्त भगवान बनाने का कार्य किया जा रहा है।

महाविद्यालय के माध्यम से अब तक ४९८ शास्त्री विद्वान तैयार होकर पूरे देश में शासकीय एवं प्रशासकीय सेवाओं में कार्यरत हैं। और इन सभी के माध्यम से यथासम्भव तत्त्व-प्रचार प्रसार का कार्य भी हो रहा है।

सभी स्नातक विद्वान आपस में एक दूसरे से जुड़कर तत्त्वप्रचार कर सकें, इस दृष्टि से समस्त भूतपूर्व विद्यार्थियों के एक रचनात्मक संगठन की आवश्यकता अनेक वर्षों से अनुभव की जा रही थी। समय-समय पर अनेक स्नातकों ने इस संदर्भ में अपने विचार भी व्यक्त किये।

भूतपूर्व विद्यार्थियों की इस आवश्यकता को ध्यान में रखते हुये '**पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद ट्रस्ट**' का गठन किया गया है, जिसका विधिवत् रजिस्ट्रेशन भी हो चुका है एवं इस ट्रस्ट के अंतर्गत '**पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद**' की स्थापना की गई है। इस परिषद में श्री टोडरमल स्मारक भवन में चलनेवाले विद्यालयों के सभी शास्त्री (स्नातक) भूतपूर्व छात्र विद्वान स्वत: ही इसके सदस्य होंगे।

परिषद के सभी सदस्यों को जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक), वीतराग-विज्ञान (मासिक) एवं पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा समय-समय पर प्रकाशित विशिष्ट साहित्य नि:शुल्क भेजा जायेगा, ताकि वे ट्रस्ट के द्वारा संचालित की जाने वाली तत्त्वज्ञान की गतिविधियों से सक्रियरूप से जुडे रहे एवं समय-समय पर प्रकाशित आवश्यक सूचनायें भी उन्हें मिलती रहें। इसके अलावा भी तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार की अनेक योजनायें इस परिषद द्वारा संचालित की जावेंगी।

इस परिषद की प्रथम कार्यकारिणी के **अध्यक्ष** पण्डित अभयकुमार शास्त्री देवलाली, **कार्याध्यक्ष** पण्डित शान्तिकुमार पाटील जयपुर, **उपाध्यक्ष** पण्डित प्रदीप झांझरी उज्जैन, पण्डित अशोक लुहाड़िया, मंगलायतन-अलीगढ़, डॉ. मुकेश 'तन्मय' विदिशा, **महामंत्री** पण्डित पीयूष जैन जयपुर एवं **कोषाध्यक्ष** के पद पर पण्डित धर्मेन्द्र शास्त्री जयपुर का मनोनयन किया गया है।

इसके अलावा डॉ. राकेश शास्त्री मंगलायतन-अलीगढ़, डॉ. वीरसागर जैन दिल्ली,

पण्डित जिनचन्द शास्त्री कोल्हापुर, पण्डित राजकुमार शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित ऋषभ शास्त्री अहमदाबाद, पण्डित रतनचन्द शास्त्री कोटा, पण्डित अनिल शास्त्री भिण्ड, पण्डित ऋषभ शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित जम्बूकुमार शास्त्री चैन्नई, पण्डित विराग शास्त्री नागपुर, विदुषी स्वानुभूति जैन मुम्बई, पण्डित जिनेन्द्र शास्त्री उदयपुर एवं पण्डित अनेकान्त शास्त्री मुम्बई कार्यकारिणी के सदस्य हैं।

परिषद के सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है। **परिषद की इस नवगठित कार्यकारिणी की प्रथम बैठक एवं अधिवेशन का आयोजन** ५ अक्टूबर से १४ अक्टूबर तक श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में आयोजित ११ वें शिक्षण-शिविर के दौरान दशहरे के अवसर पर **९ अक्टूबर को होने जा रहा है।**

सभी भूतपूर्व छात्रों को अधिवेशन में उपस्थित होने हेतु हमारा हार्दिक आमंत्रण है।

ह्न यशपाल जैन, महामंत्री-पं. टोडरमल स्नातक परिषद् ट्रस्ट

पीएच.डी. की उपाधि से सम्मानित

१. श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक **श्री मनीषकुमार जैन शास्त्री** को डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के हिन्दी विभाग से उनके शोध विषय '**आ. अभिनवगुप्त एवं आ. रामचंद्र शुक्ल की रस संबंधी मान्यताओं का तुलनात्मक अध्ययन**' पर पीएच.डी की उपाधि प्रदान की गई। आपके शोध निर्देशक प्रो. हौसिला प्रसाद सिंह थे। आप वर्तमान में श्री कुन्दकुन्द जैन स्नातकोत्तर महा. **खतौली** में व्याख्याता पद पर कार्यरत हैं।

ज्ञातव्य है कि आप इस उपलब्धि के पूर्व यू.जी.सी. द्वारा आयोजित नेट परीक्षा हिन्दी विषय में पास कर चुके हैं। आपको डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर द्वारा गौर सम्मान से सम्मानित किया जा चुका है।

२. श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक **श्री नितेश शाह, बाँसवाड़ा** को उनके शोध प्रबंध '**कविवर द्यानतराय के साहित्य में प्रतिबिम्बित अध्यात्म चेतना**' विषय पर राजस्थान विश्वविद्यालय ने डाक्टरेट की उपाधि प्रदान की। आपने यह शोध जैन अनुशीलन केन्द्र राजस्थान विश्वववविद्यालय के निदेशक प्रो. पी.सी. जैन के मार्गदर्शन में पूर्ण किया है। आप वर्तमान में जयपुर के दिल्ली पब्लिक स्कूल में वरिष्ठ अध्यापक पद पर कार्यरत हैं।

वीतराग-विज्ञान एवं महाविद्यालय परिवार आप दोनों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

दान राशि प्राप्त

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को प्रशिक्षण-शिविर ध्रुव फण्ड हेतु दादा श्री भगवानजी अंदरजी मेघाणी, दादीश्री रतनबाई मेघाणी, पिताजी श्री गुलाबचन्दजी मेघाणी, माताश्री जयागौरी मेघाणी, फैला. चंपाबेन शिवकुवरबा हस्ते भारती उमेश शाह, उमेश के.शाह घाटकोपर, मुम्बई की ओर से २५,०००/- रुपये प्राप्त हुये हैं; एतदर्थ धन्यवाद !

हार्दिक शुभकामनायें !

श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक **श्री जितेन्द्र राठी** ने राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, लखनऊ से शिक्षाशास्त्री (बी.एड.) में प्रथम एवं समस्त संस्थान में द्वितीय स्थान प्राप्त किया है। ज्ञातव्य है कि आपने साहित्याचार्य में राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय से स्वर्ण पदक प्राप्त किया था। आपको हार्दिक शुभकामनायें ! **ह्न प्रबन्ध सम्पादक**

(पृष्ठ १८ का शेष...)

अनंत बार किये हैं; परन्तु वे सब व्यर्थ गये हैं। अब यदि कोई यहाँ धर्मक्षेत्र में आकर भी भक्ति के भाव से ही धर्म होना माने तो वह भी मिथ्यात्व का ही पोषण करता है।

प्रश्न ह्न भक्ति के भाव में धर्म मानता है, वह कम मूढ़ता है ह्न ऐसा तो कहो ?

उत्तर ह्न नहीं, नहीं; वह पूरी मूढ़ता है। राग में धर्म माननेवाले को पूरी मूढ़ता है, वह पूरा ही मिथ्यादृष्टि है। कम-ज्यादा मिथ्यात्व का यहाँ कोई प्रश्न ही नहीं है। सूक्ष्म बात है भाई !

यहाँ शुद्धनिश्चयनय से देखने पर तो स्वभावशुद्धपर्यायस्वरूप परमाणु को ही पुद्गलद्रव्य कहा गया है। बाकी इन पैसों को, स्त्री-पुत्रादि के शरीर को, दाल-भात को पुद्गलद्रव्य कहना तो व्यवहार है। अहा..! इकट्ठे हुये बहुत परमाणु के पिण्ड को पुद्गल कहना व्यवहार है, इसलिये अकेले परमाणु को ही वास्तविक पुद्गल कहते हैं। इसीप्रकार अपनी पर्याय में राग एवं पुण्य-पाप के विकल्प से भिन्न आत्मा का भान हुआ तो ऐसा जो शुद्धात्मा है, उसको ही आत्मा कहा है अर्थात् अनुभव तो पर्याय है और उससे सहित आत्मा को आत्मा कहा गया है।

अहा...! आत्मा तो उसको कहते हैं कि जिसको शरीर, मन, वाणी और दया, दान, व्रतादि के विकल्पों से भिन्न भगवान आत्मा अनुभव में आता है। अहा ! स्वानुभूति में कोई विकल्प नहीं रहता; उसमें तो एक आत्मा की ही दृष्टि रहती है, यही कारण है कि अनुभूति से भिन्न अन्य सभी भावों को पुद्गल कहा जाता है, जबकि अनुभूति सहित आत्मा को आत्मा कहा जाता है।

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा ह्न

राष्ट्रीय स्तर पर बुंदेलखंड तीर्थयात्रा

(दिनांक ७ दिसम्बर, ०८ से १४ दिसम्बर, ०८ तक)

अत्यंत हर्षपूर्वक सूचित किया जाता है कि आत्मानुभूति के संकल्प सहित तत्त्वप्रचार में संलग्न अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा बुंदेलखंड के तीर्थक्षेत्रों की यात्रा हेतु **वीतराग-विज्ञान तीर्थयात्रा संघ** निकाला जा रहा है, जिसमें देशभर से लगभग ३०० साधर्मी सम्मिलित होंगे।

यह यात्रा दिनांक ७ दिसम्बर, ०८ को सिद्धक्षेत्र सोनागिर से प्रारम्भ होकर करगुंवाजी, पवाजी, गोलाकोट, खनियांधाना, चंदेरी, खंदारगिरी, थूवोनजी, बरौदास्वामी, सीरोनजी, पपौंरा, बानपुर, देवगढ़, ललितपुर, आहारजी, खजुराहो, डेरापहाडी (छतरपुर), नैनागिर, कुण्डलपुर, द्रोणगिरी आदि तीर्थक्षेत्रों के लगभग ३०७ जिनमंदिरों के दर्शन वन्दना कर दिनांक १४ दिसम्बर, ०८ को सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरी में सम्पन्न होगी।

इस यात्रा के दौरान न केवल क्षेत्रों के दर्शन का लाभ मिलेगा; अपितु साथ ही तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल आदि यात्रा के दौरान साथ रहनेवाले अन्य विशिष्ट विद्वानों के माध्यम से तत्त्वज्ञान का लाभ मिलेगा।

इस यात्रा के संघ पति बनने का सौभाग्य **श्री जमनालालजी सूरजदेवी सेठी, जयपुर** को प्राप्त हुआ है।

यह सम्पूर्ण यात्रा **2 X 2** लग्जरी बसों के द्वारा सम्पन्न की जायेगी तथा यात्रा के दौरान यथोचित आवास और शुद्ध सात्विक भोजन (हिन्दी व गुजराती) के अतिरिक्त उच्च कोटि की अन्य व्यवस्थायें रहेंगी ।

यात्रा में सम्मिलित होने हेतु कुल **राशि चार हजार पाँच सौ रुपये** रखी गई है, जिसमें श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महा. के स्नातकों (पत्नी सहित) को यात्रा संघपति की ओर से **एक-एक हजार रुपये** की छूट रहेगी।

यात्रा में सम्मिलित होने हेतु आवेदन की **अंतिम तिथि १४ अक्टूबर** है। यात्रा की विस्तृत जानकारी एवं आवेदन पत्र हेतु निम्न पते एवं फोन नम्बर पर सम्पर्क करें ह्न

वीतराग-विज्ञान यात्रा संघ

C/O अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, ए ह्न ४, बापूनगर, जयपुर ह्न १५ (राज.)

फोन नं. ह्न (०१४१) २७०५५८१, २७०७४५८,

पीयूष जैन - ०९४१३३४७८२९, धर्मेन्द्र शास्त्री - ०९४१४७१७८२३

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में

पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा आयोजित

ग्यारहवाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर

(रविवार, दिनांक ५ अक्टूबर से मंगलवार, दिनांक १४ अक्टूबर ०८ तक)

आपको सूचित करते हुये अत्यंत हर्ष हो रहा है कि राजस्थान की प्रसिद्ध गुलाबी नगरी जयपुर में आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के सदुपदेश से संस्थापित ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित होनेवाले आध्यात्मिक शिविरों की शृंखला में ग्यारहवाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर इस वर्ष रविवार, दिनांक 5 अक्टूबर से मंगलवार दिनांक 14 अक्टूबर 2008 तक अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित आयोजित होने जा रहा है।

इस शिविर में लोकप्रिय प्रवचनकार डॉ. हुकमंचदजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित ज्ञानचंदजी जैन सोनागिरी, ब्र. यशपालजी जैन जयपुर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन जबलपुर, पण्डित अशोककुमारजी लुहाड़िया अलीगढ़, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बाँसवाड़ा, डॉ. मुकेशजी तन्मय विदिशा, डॉ. वीरसागरजी दिल्ली, पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर आदि अनेक विद्वानों का प्रवचनों, कक्षाओं एवं तत्त्वचर्चा के माध्यम से लाभ मिलेगा। साथ ही व्याख्यानमाला के माध्यम से अन्य अनेक विद्वानों द्वारा विविध विषयों पर व्याख्यानों का लाभ भी प्राप्त होगा।

शिविर में इस वर्ष '**जैन अध्यात्म को डॉ. भारिल्ल का साहित्यिक अवदान**' विषय पर एक सेमिनार का भी आयोजन किया जा रहा है।

इस शिविर के सम्पूर्ण कार्यक्रम पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा इन्दौर व ब्र. यशपालजी जैन जयपुर के कुशल निर्देशन में सम्पन्न होंगे।

आप सभी को शिविर में सपरिवार इष्ट मित्रों सहित पधारने हेतु हमारा भाव भीना आमंत्रण है।